- इन वनों में लकड़ी कठोर होती है।
- इनका पर्यावरणीय महत्व काफी अधिक है।
- विस्तार :- अँडमान - निकोबार, पश्चिमी घाट का पश्चिमी ढ़ाल, पूर्वोत्तर भारत (अरूणाचल प्रदेश को छोड़कर)

②. उष्णकटिबंधीय पर्णपाती या पतझड वन -

- इन्हे मानसूनी वन भी कहा जाता है।
- वाणिज्यिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण वन हैं।
- इन वनों में सभी प्रजाति की वनस्पतियाँ एक साथ पत्ते गिराती हैं।

(a) आर्द्र पर्णपाती वन :-

- मुख्य वनस्पतियाँ - सागवान, साल, शीशम, आम, चंदन, अर्जुन, कुसुम, शल्यूत आदि।
- विस्तार :- पश्चिमी घाट का पूर्वी ढ़ाल, छत्तीसगढ़, उडीसा, झारखंड, पूर्वी MP, पूर्वोत्तर भारत, प. बंगाल, कोरोमंडल तट, शिवालिक पर्वतीय क्षेत्र

(6) शुष्क पर्णपाती वन -

- मुख्य वनस्पतियां – पीपल, नीम, अक्सलवुड, पलास, खैर, अमलतास आदि।
- विस्तार
  - पंजाब, हरियाणा, UP, पूर्वी राजस्थान, पश्चिमी MP, गुजरात, प्रायद्वीपीय भारत के सभी राज्यों में।

कत्था

→ साल, सागवान के सर्वाधिक वृक्ष MP में मिलते हैं।

→ सर्वाधिक शीशम के वृक्ष UP में मिलते हैं।

→ चंदन वृक्षों के लिए मलयगिरि की पहाड़ियां (कर्नाटक) प्रसिद्ध हैं।

③ मरूस्थलीय वन :-

इन वनस्पतियों को जीरोफाइट या मरूद्भिद् वनस्पतियाँ भी कहा जाता है

खजूर, नागफनी / कैक्टस, अकेसिया, कैर, बेर, खेजड़ी, बबूल, यूफोरबिया आदि।

विशेषताएं

(i) जड़े लंबी होती हैं।

(ii) पत्तियों के स्थान पर कांटों का अधिक विकास होता हैं

(iii) पत्तियों की ऊपरी पृष्ठ चिकनी व निचला पृष्ठ खुरदरा

④ मैंग्रोव वन –